'पाठ एवं अनुवाद' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने रवींद्रनाथ टैगोर के 158वें जन्म दिवस पर 'पाठ एवं अनुवाद' विषय पर एक साहित्य मंच का आयोजन किया। कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि रवींद्रनाथ टैगोर के लिए 'गुरुदेव' का संबोधन ही उनके व्यक्तित्व की विराटता को प्रदर्शित करता है। उनका प्रभाव भारतीय समाज के हर क्षेत्र पर अभी भी है और आने वाले समय में भी रहेगा। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा उनकी जन्मशत वार्षिकी से लेकर अभी तक आयोजित किए गए कार्यक्रमों की जानकारी भी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्रख्यात अंग्रेजी लेखिका एवं साहित्य अकादेमी के अंग्रेजी भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका संयुक्ता दासगुप्ता ने 'टैगोर एवं अनुवाद' विषय पर बोलते हुए कहा कि अनुवाद अपने आप में एक नया सृजन है और इसमें जिस भाषा में अनुवाद कर रहे हैं, उसकी संस्कृति को भी जानना समझना पड़ता है। उन्होंने गीतांजलि के अंग्रेजी अनुवाद की चर्चा करते हुए नोबल पुरस्कार देने वाली संस्था स्वीडिश अकादमी के हवाले से कई टिप्पणियों को उद्धृत करते हुए कहा कि टैगोर की कविताएं मूल बाङ्ला में अंग्रेजी अनुवादों से बेहतर हैं। उन्होंने टैगोर द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने के बाद लिखे गए पत्र का भी कुछ अंश प्रस्तुत किया। प्रख्यात हिंदी लेखक एवं अनुवादक प्रयाग शुक्ल ने 'रवींद्रनाथ टैगोर का सौंदर्य चिंतन' विषय पर बोलते हुए कहा कि टैगोर की दुनिया बहुत बड़ी है। उसमें जितना ही उतरा जाए उतना ही विस्तार मिलता जाता है। टैगोर ने 'सुंदरता' की सार्थकता उसके 'अच्छे' होने में देखी थी।